उच्च प्राथमिक स्तर पर संस्कृत भाषा शिक्षा पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन का गहन अध्ययन

(An In-depth Study of Implementation of Sanskrit Language Curriculum at the Upper Primary Stage)

कृष्ण चन्द्र त्रिपाठी,* जतीन्द्र मोहन मिश्र,* रणजीत बेहरा***

संस्कृत भाषा के सबंन्ध में एक सर्वस्वीकृत मान्यता है कि यह केवल एक भाषा मात्र न होकर भारत की आत्मा है। संस्कृत भाषा एवं साहित्य, जीवन के सभी पक्षों पर आधारित ज्ञान का विशाल आगार है। भूत एवं वर्तमान के समन्वयन, पुरातन साहित्य की ज्ञान सपंदा को समझने, नवाचार के नवीनतम उपायों की खोज तथा भारत को ज्ञान आधारित विश्व के आर्थिक परिदृश्य और ज्ञान-समाज के संदर्भ में संस्कृत की सर्वाधिक अपरिहार्यता है। प्राचीन काल से ही संस्कृत भारतीय भाषाओं के साथ सह-अस्तित्व में विकसित हुई है तथा भारत की एकता और अखंडता में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत के समावेशी प्रतिदर्श में संस्कृत साहित्य का विशेष योगदान है जिसे लोकप्रिय बनाकर प्रबलीकृत करने की आवश्यकता है। संस्कृत भाषा का भारतीय शिक्षा प्रणाली में अद्वितीय स्थान है। यह भाषा आधुनिक और शास्त्रीय/ परपंरागत भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। विद्यालयों में विद्यार्थियों का बड़ा समूह प्रथम/द्वितीय/तृतीय भाषा के रूप में संस्कृत का अध्ययन कर रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर एनसीईआरटी के द्वारा पाठ्यचर्या/पाठ्यवस्तु का निर्माण किया जाता है। यह जानना ज़रूरी है कि पाठ्यक्रम (1992) यह स्पष्ट करता है कि किस प्रकार वास्तविक तथा वांछित परिवर्तन लाने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या आवश्यक है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (National Curriculum Framework)* के आलोक में विकसित किए गए पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों तथा संस्कृत के पठन-पाठन को समझने के लिए शोध कार्य अपेक्षित है।

शोध का उद्देश्य

राष्ट्रीय एंव राजकीय स्तर पर विभिन्न प्रकार के स्कूलों में संस्कृत भाषा पाठ्यचर्या के प्रभाव का अध्ययन

* कृष्ण चन्द्र त्रिपाठी, जतीन्द्र मोहन मिश्र, *प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली (e-mail: del.ncert@gmail.com)

** जतीन्द्र मोहन मिश्र, *प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली (e-mail: del.ncert@gmail.com)

*** रणजीत बेहरा, *पूर्व असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

उप-उद्देश्य

- उच्च-प्राथमिक स्तर पर संस्कृत भाषा शिक्षा की पाठ्यचर्या, पाठ्यवस्तु और पाठ्यपुस्तक सामग्री का विश्लेषण।
- *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या अभिकल्प/रूपरेखा 2005* द्वारा प्रस्तावित नवीन शिक्षण पद्धतियों/ शिक्षा प्रणाली का अध्योपकों द्वारा किस प्रकार परिपालन हो रहा है, शिक्षा अधिगम प्रक्रिया की खोज का अध्ययन। शिक्षकों, शिक्षिकाओं तथा अभिभावकों के संस्कृत भाषा शिक्षा के कार्यप्रणाली पर्यवेक्षण का एकत्रीकरण एवं विश्लेषण।

शोध प्रश्न

- क्या विद्यालयों में रूचिपूर्ण शिक्षण हो रहा है?
- क्या विद्यालयों में बालकेंद्रित शिक्षण हो रहा है?
- क्या विद्यालयों में संरचनावादी दृष्टिकोण परिलक्षित हो रहा है?
- क्या विद्यालयों में भाषा शिक्षण के लिए संप्रेषणात्मक दृष्टिकोण परिलक्षित हो रहा है?
- क्या विद्यालयों में अन्त:सांस्कृतिक दृष्टिकोण परिलक्षित हो रहा है?
- क्या विद्यालयों में सह-शिक्षण क्रियाकलाप हो रहे हैं?
- क्या विद्यालयों में योगात्मक मूल्यांकन हो रहा है?
- क्या विद्यालयों में रचनात्मक मूल्यांकन हो रहा है?
- क्या विद्यालयों में बहुभाषिकता का क्रियान्वयन हो रहा है?

न्यायदर्श

प्रस्तुत शोधाध्ययन के लिए निम्नलिखित चार राज्यों को संस्कृत भाषा शिक्षा के विभिन्न प्रणालियों के लिए न्यायदर्श के रूप में चयनित किया गया है।

- हरियाणा, जहाँ प्रत्यक्ष रूप से *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* पाठ्यवस्तु, पाठ्यपुस्तक को अंगीकृत किया गया है तथा वहाँ उच्च प्राथमिक स्तर पर संस्कृत भाषा तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है।
- ओडिशा, जहाँ परिवर्तित *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* को अंगीकृत किया है तथा उच्च प्राथमिक स्तर पर संस्कृत तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है।
- उत्तराखंड, जहाँ ने परिवर्तित *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* को अंगीकृत किया है एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर संस्कृत भाषा को द्वितीय भाषा के रूप में अध्ययन किया जाता है।
- केरल, जहाँ राज्य स्वयं पाठ्यचर्या की रूपरेखा, पाठ्यवस्तु और शिक्षण सामग्री का निर्माण करता है, यहाँ पर संस्कृत भाषा उच्च प्राथमिक स्तर पर प्रथम भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है।

न्यायदर्श चयन की विधि

शोध की आवश्यकता के अनुरूप *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005* के सिद्धांतों पर आधारित संस्कृत पाठ्यपुस्त्कों का राष्ट्रीय/राजकीय स्तर पर किस प्रकार से क्रियान्वयन हो रहा है। यह जानने के

© NCERT not to be republished

लिए विभिन्न राज्यों-हरियाणा, ओड़िशा, उत्तराखंड, केरल के विद्यालयों का चयन स्तरीकृत, यादृच्छिक प्रतिदर्श (Stratified Random Sampling) विधि द्वारा किया गया।

उपकरण (Tools)

एनआईई परिसर, एनसीईआरटी, नई दिल्ली में आयोजित चतुर्दिवसीय कार्यशाला में सम्मिलित सात सदस्यों—विश्व विद्यालयों प्राध्यापक, विद्यालयों के अध्यापक तथा एनसीईआरटी संकाय सदस्यों ने सुनिश्चित किया। विद्वत समूह ने निम्नलिखित तथ्यों पर उपकरण तैयार किए गए।

1. पाठ्यचर्या पाठ्य पुस्तिका का विश्लेषण
2. संस्कृत में शिक्षण अधिगम सामग्री
3. संस्कृत भाषा पाठ्यपुस्तक के प्रति अध्यापकों की अवधारणा
4. संस्कृत भाषा शिक्षा के प्रति अध्यापकों की प्रवृत्ति एवं अवधारणा
5. छात्र प्रश्नावली
6. कक्षा अवलोकन सूची
7. विद्यालयी रूपरेखा

उपकरण का प्रयोग (Piloting Tools)

वर्ष 2014, अप्रैल के प्रथम सप्ताह के दौरान हरियाणा के तीन विद्यालयों एवं दिल्ली के सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीन पार्क में उपकरणों का प्रयोगिक परीक्षण किया गया। परीक्षण के उपरांत उपकरण मे किसी प्रकार के संशोधन की आवश्यकता अनुभव नहीं की गई। इस प्रयोग को परियोजना कार्य में सम्मिलित कर लिया गया। प्रदत्त संकलन एवं विश्लेषण के समय दिल्ली के विद्यालय को भी सम्मिलित कर लिया गया।

विद्यालयों का चयन (Selection of Schools)

राज्यावा— हरियाणा, उड़ीसा, उत्तराखंड तथा केरल के 12 स्कूलों (5 ग्रामीण, 5 शहरी, 1 केंद्रीय विद्यालय और 1 संस्कृत पाठशाला) को न्यादर्श के रूप में चयनित किाय गया है। राज्य स्तरीय संस्थाएँ, एससीईआरटी विद्यालय निरीक्षण के लिए संपर्क मे रही।

निष्कर्ष

इस परियोजना का प्रतिफल यह निकला कि उच्च प्राथमिक स्तर पर संस्कृत पाठ्यचर्या का क्रियान्वयन भली-भाँति हो रहा है। ओड़िसा और केरल राज्यों में एससीईआरटी द्वारा निर्मित पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। शोधाध्ययन से ज्ञात होता है कि नवीन शिक्षण पद्धतियों तथा नवीन प्रणालियों का संस्कृत भाषा शिक्षण में सम्यक् ढंग से प्रयोग किया जा रहा है। सभी चयनित विद्यालयों में मातृभाषा को स्थान दिया जा रहा है। साथ ही यह ज्ञात हुआ कि संस्कृत शिक्षण के लिए संस्कृत सम्भाषण पर अधिक बल देने की आवश्यकता है। संस्कृत शिक्षकों को पुनर्बलन, अभिमुखीकरण की महती आवश्यकता है। साथ ही संस्कृत अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा पुनश्चर्या कार्यक्रम वर्ष में एक बार अथवा अधिक बार कराने की आवश्यकता महसूस की गई।

© NCERT not to be republished